6. गृह की छत एसबेस्टॉस शीट या आर सी सी से निर्मित होनी चाहिए ताकि ऊजी मक्खी का प्रवेश न हो सके। गर्म क्षेत्रों में दिन में गर्मी से बचने हेतु छत को नारियल के पत्तों और पुआल से ढकना चाहिए। प्लाइवुड या थर्मोकॉल से भीतरी छत बनाने से भी छत से आने वाले ताप को कम किया जा सकता है।
7. कीटपालन गृह की न्यूनतम चौड़ाई 5.5 मी (18') होनी चाहिए। कीटपालन गृह की लंबाई निम्नानुसार परिकलित की जा सकती है।

तलों की संख्या	कीटपालन गृह की लंबाई फुट में
4 तल वाले प्ररोह कीटपालन मंच के लिए	0.20 x रो मु बी च की संख्या + 10
5 तल वाले प्ररोह कीटपालन मंच के लिए	0.16 x रो मु बी च की संख्या + 10

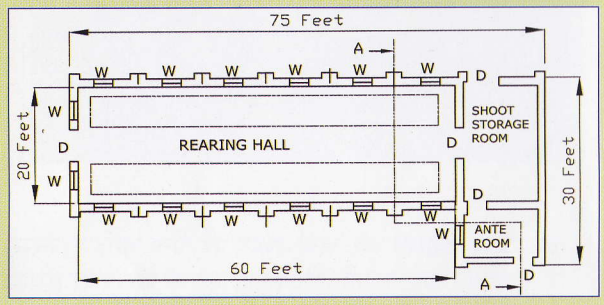

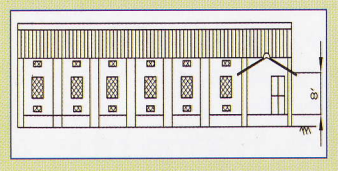

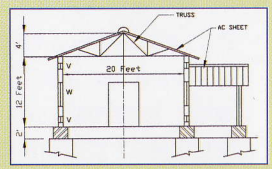

8. कीटपालन गृह की दीवारों की ऊँचाई न्यूनतम 10' और मध्य में 14' होनी चाहिए।
9. कीटपालन क्षेत्र में प्रवेश करने के पहले हाथ-पांव धोने तथा विसंक्रमित करने हेतु उपकक्ष होना चाहिए।
10. ऊजी मक्खी को कीटपालन गृह में प्रवेश करने से रोकने हेतु दरवाजो और खिड़कियों में जाली लगानी चाहिए।
11. सफाई/धुलाई एवं विसंक्रमण और आर्द्रीकरण हेतु कीटपालन गृह में जल की उपलब्धता होनी चाहिए।
12. रात में काम करने हेतु कीटपालन गृह में प्रकाश की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
13. तापक, आर्द्रकर, शीतित्र एवं प्रकाश की व्यवस्था हेतु कीटपालन गृह में इलेक्ट्रिकल पांइट होने चाहिए।
14. वर्षाकाल में कीटपालन गृह से आर्द्रता निकालने हेतु एक्सॉस्ट फैन का प्रावधान होना चाहिए।
15. कीटपालन गृह में चूहे, छिपकली आदि के प्रवेश को रोकने हेतु आवश्यक व्यवस्था की जानी चाहिए।
16. कीटपालन गृह की दीवारों तथा छत को कड़ी धूप से बचाने हेतु इसके चारों तरफ छायादार वृक्षों को लागाना चाहिए।

कृषकों द्वारा निर्मित कीटपालन गृह

रेशमकीट पालन गृह

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान
केंद्रीय रेशम बोर्ड
वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
मैसूर - 570 008

दूरभाष : 0821-2362757, 2901103
फैक्स : 0821-2362845
ई-मेल : director@csrtimys.res.in
वेबसाइट : www.csrtimys.res.in

रेशमकीट पालन गृह वह स्थान है जहाँ रेशमकीटों को कोसा बनाने हेतु पाला जाता है। रेशमकीटों को अनुकूलतम पर्यावरणीय स्थितियाँ अर्यात् तापमान, आपेक्षिक आर्द्रता, संवातन, प्रकाश, स्वास्थ्य–सुरक्षा आदि न होने पर कोसा गुणवत्ता एवं उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। रेशमकीटों की तेज और स्वास्थ्यकर वृद्धि के लिए सूक्ष्म जलवायु एवं पर्यावरणी स्थिति बनाए रखने हेतु कीटपालन गृह का विवेकपूर्ण ढंग से परिकल्पन किया जाना है। रेशमकीट पालन गृह के अंदर अनुकूलपम पर्यावरणी स्थिति पैदा करने तथा बनाए रखने हेतु सुविधाएं होनी चाहिए। रेशमकीट पालन गृह में रेशमकीट पालन करने वाले श्रमिकों के लिए पर्याप्त जगह और स्वास्थ्यकर पर्यावरण होना चाहिए।

रेशम कीटपालन के लिए अनुकूलतम पर्यावरणी स्थिति

रेशमकीटों की विभिन्न अवस्थाओं में आवश्यक अनुकूलतम तापमान और आपेक्षिक आर्द्रता निम्नानुसार है :

अवस्था	तापमा सें ग्रे	आपेक्षिक आ ता %
I	27-28	85-90
II	27-28	85-90
III	26-27	75-80
IV	25-26	70-75
V	25-26	70-75

कीटपालन गृह के अंदर का तापमान और आपेक्षिक आर्द्रता अनुकूलतम स्थिति से कम होने पर उन्हें कोयला, इलेक्ट्रिक हीटरों आदि के माध्यम से और आर्द्रकर चलाते हुए कृत्रिम रूप से बढाया जा सकता है। कीटपालन गृह का तापमान और आपेक्षिक आर्द्रता अनुकूलतम स्थिति से अधिक होने पर नारियल पत्तों, घास आदि से बनी चटाइयों से छत बनाने के अलावा प्राकृतिक रूप से यथा अच्छे संवातन के माध्यम से या कृत्रिम रूप से खिड़कियों पर गीला परदा लगाकर या वायु कूलरों के माध्यम से ठंडा करने की व्यवस्था की जानी चाहिये।

प्रकाश या प्रदीप्ति (लाईट)

शिशु रेशमकीट अंधकार या कम प्रकाश (15–30 लक्स) को पसंद करते हैं। प्रकाश तीव्रता कीटपालन शय्या में कीटों को रहने को प्रभावित करती है। रेशमकीट कीटपालन शय्या में प्रकाशमान स्थान की तुलना में अंधकारपूर्ण स्थान पर अधिक एकत्रित हो जाते हैं।

संवातन (वेंटिलेशन)

रेशमकीट पालन गृह ठीक तरह संवातित होना चाहिए। संवातन कम होने पर आर्द्रता बनी रहती है और कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बन डाइआँकसाइड, अमोनिया आदि जैसी हानिकारक गैसें एकत्रित हो जाती हैं जिससे रेशमकीटों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और बीमारी का खतरा होता है।

रेशमकीटों के लिए कीटपालन शय्या था क्षेत्रफल

रेशमकीट की विभिन्न प्रजातियों के लिए वृद्धि की विभिन्न अवस्थाओं में 100 डीएफएल (dfl) (लगभग 40,000 लार्वे) के लिए कीटपालन शय्या क्षेत्रफल निम्नानुसार हैं :

रेशमकीट के लिए विविध अवस्थाओं में कीटपालन शय्या क्षेत्रफल : 1 वर्ग मीटर = 10 वर्ग फुट (1 sqm=10 sq.ft.)

अवस्था	बहुप्रज के लिए शय्या क्षेत्र (वर्ग मी/वर्गफुट)	द्विप्रज के लिए शय्या क्षेत्र (वर्ग मी/वर्ग फुट)
पहली	1.50/15	1.75/17.5
दूसरी	4.50/45	5.25/52.5
तीसरी	9.00/90	12.00/120
चौथी	24.00/240	133.00/330
पांचवीं	50.00/500	77.00/700

चाकी रेशम कीटपालन गृह

शिशु रेशम कीटपालन गृहों को प्राय: चाँकी कीटपालन गृह कहा जाता है। शिशु रेशमकीटों के अच्छे और स्वास्थ्यपूर्ण विकास के लिए तापमान, आपेक्षिक आर्द्रता और स्वास्थ्यकर स्थिति प्रदान की जानी चाहिये। प्रति सत्र में 5000–6000 डी एफ़ एल का अंतरण करने लायक चाँकी कीटपालन केंद्र में 30' x 30' आकार का कीटपालन कक्ष, 10' x 20' आकार का पत्ती भंडारण कक्ष और 10' x 10'आकार का उपकक्ष होते हैं। कीटपालन कक्ष में पर्याप्त संवातन का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कीटपालन कक्ष के अंदर दीवारों की तरफ नालियों में निरंतर जल प्रवाह होने से रेशमकीटों से चींटियाँ दूर हो जाएंगी और आर्द्रता बनी रहेगी। ऊजी मक्खी को अंदर आने से रोकने हेतु खिड़कियों जाली को लगाया जाए। फर्श से 9–11' ऊपर छत होनी चाहिए। छत की ऊंचाई अधिक होने पर फर्श से 8'–9' ऊंचाई पर भीतरी छत लगानी है जिससे कीटपालन कक्ष में वायु की मात्रा कम करने में सहायता होनी ताकि अपेक्षित तापमान और आर्द्रता को सुविधापूर्वक बनाए रख जा सके।

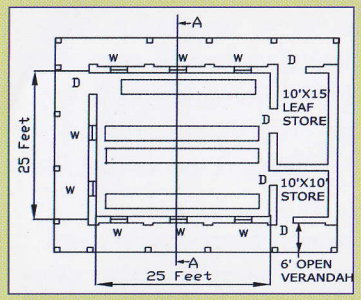

वयस्क कीटपालन गृह बनाने के लिए दिशा–निर्देश

1. वयस्क कीटपालन गृह ऊंचे स्थान पर होना चाहिए जिससे कि फर्श की आर्द्रता को कीटपालन गृह में फैलने से बचाया जा सके। अच्छी संवातन व्यवस्था प्रदान करें और सफाई तथा विसंक्रमण के दौरान पानी बाहर जाने की सुविधा बनाएं।
2. कीटपालन गृह उत्तर दिशा की ओर अभिमुख होना चाहिए अर्यात् खिड़कियां उत्तर और दक्षिण की तरफ हों। इससे कीटपालन गृह में सूर्य प्रकाश सीधे अंदर पड़ने से बचा जा सकता है।
3. कीटपालन गृह के अंदर वायु संचार के लिए खिड़कियों के ऊपर व नीचे वातायनियाँ (वेंटीलेटर्स) होनी चाहिए।
4. स्वस्थ वातावरण बनाए रखने हेतु कीटपालन गृह का फर्श पक्का अथवा सीमेंट का बना होना चाहिए।
5. कीटपालन क्षेत्र में चींटियों को प्रवेश करने से रोकने तथा सफाई तथा विसंक्रमण करते समय पानी को निकाल देने हेतु कीटपालन कक्ष के अंदर चारों ओर 10–15 सें मी गहराई की नालियां बनानी चाहिए। गर्मी के दिनों में नालियों का जल हवा की आर्द्रता बढ़ाने तथा निचली वातायनियों से अंदर आने वाली वायु को शीतल बनाने में सहायक होता है।